

भगवान् श्रीगणेशजी

आरति गजवदन विनायककी ।
सुर-मुनि-पूजित गणनायककी ॥ टेक ॥
एकदंत शशिभाल गजानन,
विघ्नविनाशक शुभगुण कानन,
शिवसुत वन्द्यमान-चतुरानन,
दुःखविनाशक सुखदायककी ॥ सुर० ॥
ऋद्धि-सिद्धि-स्वामी समर्थ अति,
विमल बुद्धि दाता सुविमल-मति,
अघ-वन-दहन, अमल अबिगत गति,
विद्या-विनय-विभव-दायककी ॥ सुर० ॥
पिङ्गलनयन, विशाल शृङ्गधर,
धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश-कर,
लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर,
सुर-वन्दित सब विधि लायककी ॥ सुर० ॥



भगवान् जगदीश्वर

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे ॥

भक्तजनोंके संकट छिनमें दूर करे ॥ ॐ० ॥

जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसै मनका ॥ प्रभु० ॥

सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका ॥ ॐ० ॥

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥ प्रभु० ॥

तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ० ॥

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु० ॥

पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ० ॥

तुम करुणाके सागर तुम पालन-कर्ता ॥ प्रभु० ॥

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ० ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ॥ प्रभु० ॥

किस बिधि मिलूँ दयामय! मैं तुमको कुमती ॥ ॐ० ॥

दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे ॥ प्रभु० ॥

अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ० ॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु० ॥

श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतनकी सेवा ॥ ॐ० ॥





श्रीलक्ष्मीजी

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता ॥ ॐ ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता ।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ ॥
दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता ।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता ॥ ॐ ॥
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता ॥ ॐ ॥
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥ ॐ ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान-पानका वैभव सब तुमसे आता ॥ ॐ ॥
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता ॥ ॐ ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ॐ ॥



भगवान् शिव

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा

॥ ॐ हर हर महादेव ॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै।

हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥ २ ॥ ॐ हर हर०

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।

तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै ॥ ३ ॥ ॐ हर हर०

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी।

त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ॥ ४ ॥ ॐ हर हर०

श्वेताम्बर पीताम्बर बाधाम्बर अंगे।

सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ॥ ५ ॥ ॐ हर हर०

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी।

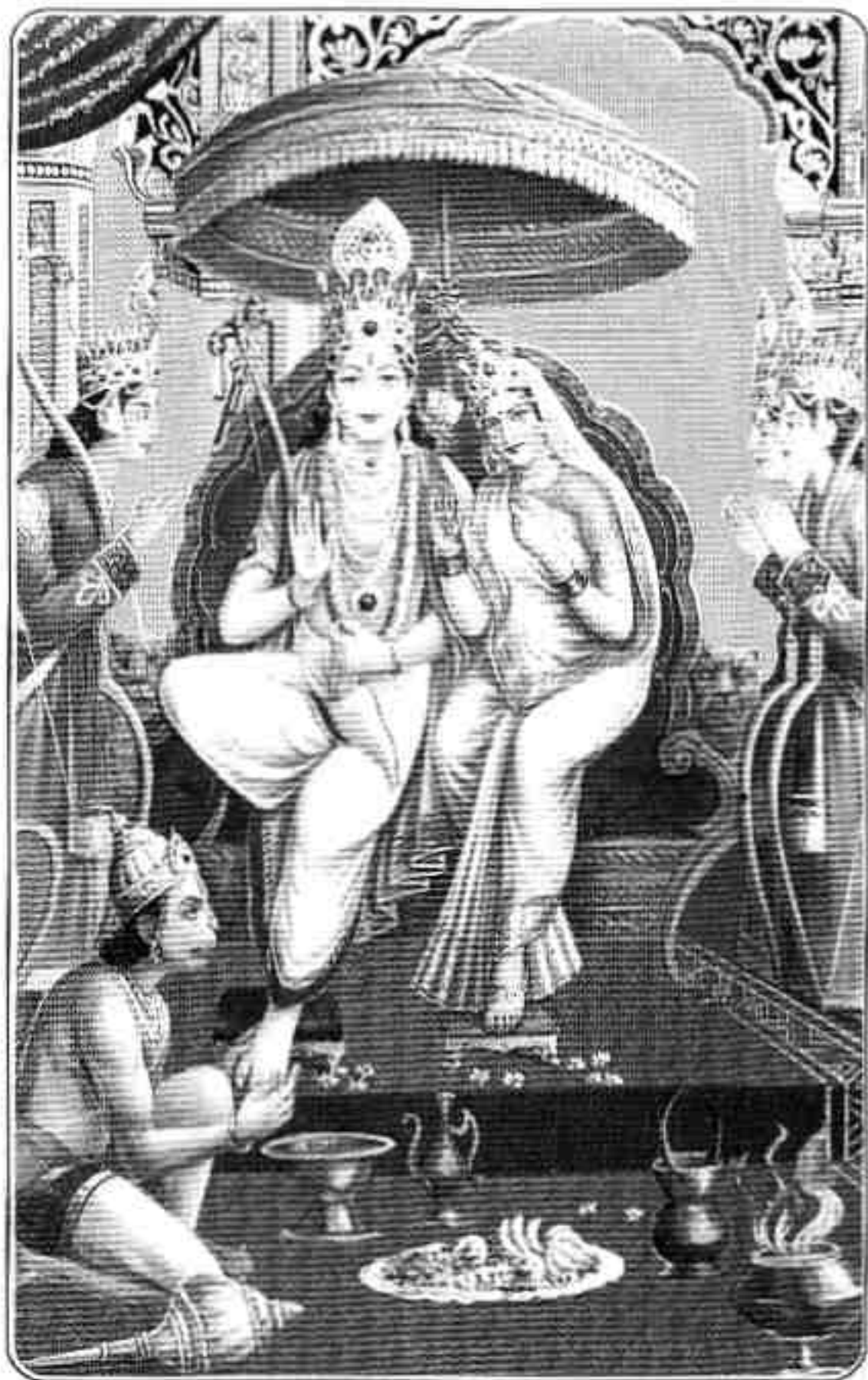
सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी ॥ ६ ॥ ॐ हर हर०

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।

प्रणवाक्षरमें शोभित ये तीनों एका ॥ ७ ॥ ॐ हर हर०

त्रिगुणस्वामिकी आरति जो कोइ नर गावै।

भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित पावै ॥ ८ ॥ ॐ हर हर०



भगवान् श्रीजानकीनाथ

जय जानकिनाथा, जय श्रीरघुनाथा ।

दोउ कर जोंरें बिनवाँ प्रभु! सुनिये बाता ॥ टेक ॥

तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता-माता ।

तुम ही सज्जन-संगी भक्ति-मुक्ति-दाता ॥ जय० ॥

लख चौरासी काटो मेटो यम-त्रासा ।

निसिदिन प्रभु मोहि राखिये अपने ही पासा ॥ जय० ॥

राम भरत लछिमन सँग शत्रुहन भैया ।

जगमग ज्योति विराजै, सोभा अति लहिया ॥ जय० ॥

हनुमत नाद बजावत; नेवर झमकाता ।

स्वर्णथाल कर आरती कौसल्या माता ॥ जय० ॥

सुभग मुकुट सिर, धनु कर सोभा भारी ।

मनीराम दर्शन करि पल-पल बलिहारी ॥ जय० ॥



भगवान् कुंजबिहारी

आरती कुंजबिहारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥ (टेक)

गलेमें बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला ।

श्रवनमें कुण्डल झलकाला, नंदके आनंद नंदलाला ॥ श्रीगिरधर० ॥

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतनमें ठाढ़े बनमाली,

भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-सी झलक,

ललित छबि स्यामा प्यारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनको तरसै,

गगन सों सुमन रासि बरसै,

बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,

अतुल रति गोपकुमारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा,

स्मरन ते होत मोह-भंगा,

बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,

चरन छबि श्रीबनवारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

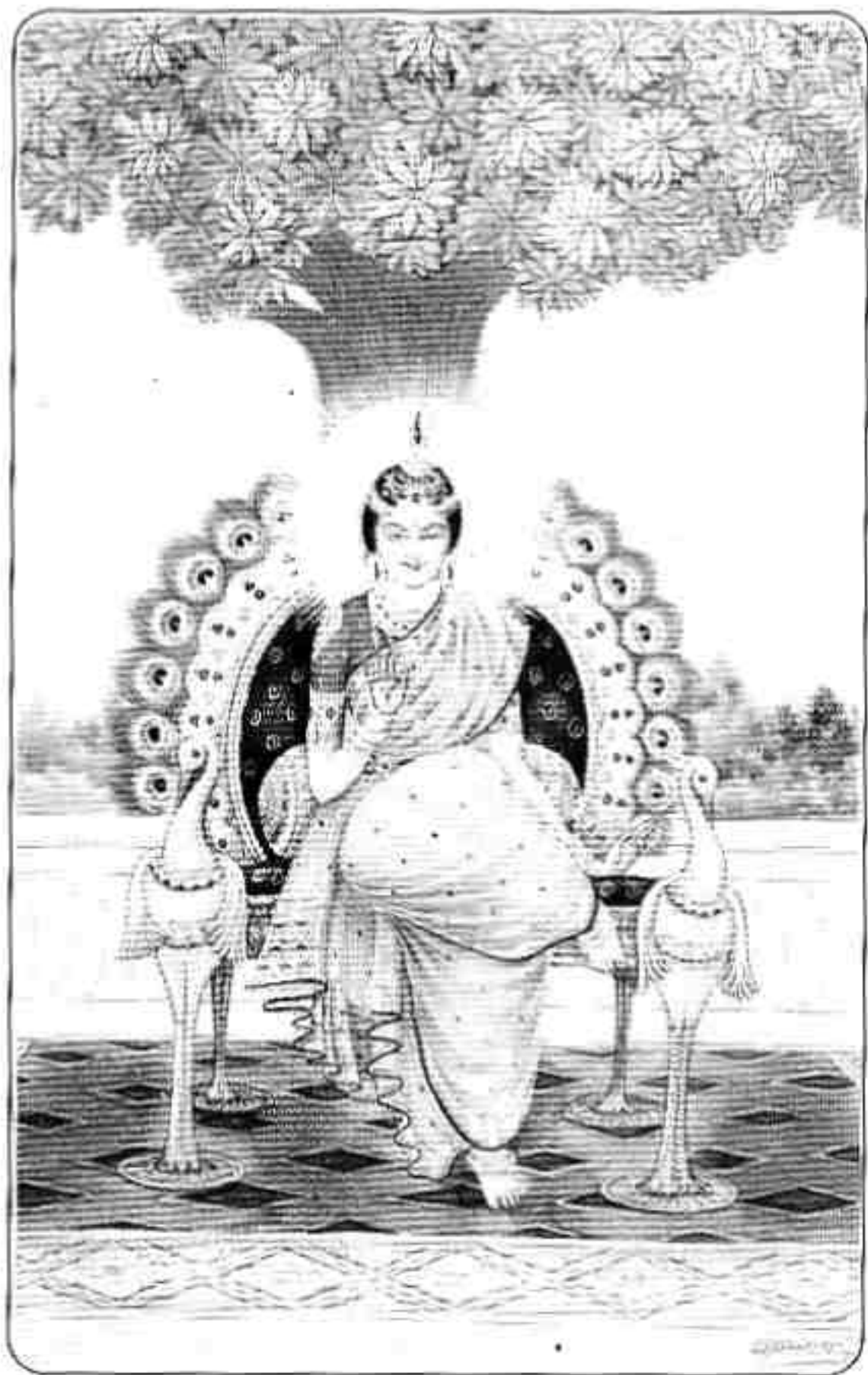
चमकती उज्ज्वल तट रेनु, बज रही बृन्दाबन बेनु,

चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनु,

हंसत मृदु मंद, चाँदनी चंद्र, कटत भव-फंद,

टेर सुनु दीन दुखारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

आरती कुंजबिहारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥



श्रीराधाजी

आरति श्रीवृषभानुसुताकी ।

मंजु मूर्ति मोहन-ममताकी ॥ टेक ॥

त्रिविध तापयुत संसृति नाशिनि,
विमल विवेकविराग विकासिनि,
पावन प्रभु-पद-प्रीति प्रकाशिनि,
सुन्दरतम छवि सुन्दरताकी ॥ १ ॥

मुनि-मन-मोहन मोहन-मोहनि,
मधुर मनोहर मूरति सोहनि,
अविरलप्रेम-अमिय-रस-दोहनि,
प्रिय अति सदा सखी ललिताकी ॥ २ ॥

संतत सेव्य संत-मुनि-जनकी,
आकर अमित दिव्यगुन-गनकी,
आकर्षिणी कृष्ण-तन-मनकी,
अति अमूल्य सम्पति समताकी ॥ ३ ॥

कृष्णात्मिका, कृष्ण-सहचारिणि,
चिन्मयवृन्दा-विपिन-विहारिणि,
जगज्जननि जग-दुःखनिवारिणि,
आदि अनादि शक्ति विभुताकी ॥ ४ ॥



श्रीअम्बाजी

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी ।

तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ॥ १ ॥ जय अम्बे०

माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको ।

उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ॥ २ ॥ जय अम्बे०

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।

रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै ॥ ३ ॥ जय अम्बे०

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी ।

सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ ४ ॥ जय अम्बे०

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
 कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती ॥ ५ ॥ जय अम्बे०
 शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती ।
 धूप्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥ ६ ॥ जय अम्बे०
 चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
 मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ ७ ॥ जय अम्बे०
 ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी ।
 आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ८ ॥ जय अम्बे०
 चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ ।
 बाजत ताल मृदंगा औं बाजत डमरू ॥ ९ ॥ जय अम्बे०
 तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता ।
 भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता ॥ १० ॥ जय अम्बे०
 भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी ।
 मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ ११ ॥ जय अम्बे०
 कंचन धाल विराजत अगर कपुर बाती ।
 (श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ॥ १२ ॥ जय अम्बे०
 (श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै ।
 कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ १३ ॥ जय अम्बे०



माँ सरस्वतीजी

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता ।
सद्गुण, वैभवशालिनि, त्रिभुवन विख्याता ॥ जय० ॥
चन्द्रवदनि, पद्मासिनि द्युति मंगलकारी ।
सोहे हंस-सवारी, अतुल तेजधारी ॥ जय० ॥
बायें कर में वीणा, दूजे कर माला ।
शीश मुकुट-मणि सोहे, गले मोतियन माला ॥ जय० ॥
देव शरण में आये, उनका उद्धार किया ।
पैठि मंथरा दासी, असुर-संहार किया ॥ जय० ॥
वेद-ज्ञान-प्रदायिनि, बुद्धि-प्रकाश करो ।
मोहाज्ञान तिमिर का सत्वर नाश करो ॥ जय० ॥
धूप-दीप-फल-मेवा—पूजा स्वीकार करो ।
ज्ञान-चक्षु दे माता, सब गुण-ज्ञान भरो ॥ जय० ॥
माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे ।
हितकारी, सुखकारी ज्ञान-भक्ति पावे ॥ जय० ॥

